

शुचिप्रयादिर्लु
दशवा

ASHA ARCHIVES

2831

1

ASHA ARCHIVES

५५३॥५५
५५३॥५५
५५३॥५५
५५३॥५५
५५३॥५५
५५३॥५५
५५३॥५५
५५३॥५५
५५३॥५५
५५३॥५५





ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ त्रा ग हे ल वि । त्रा त्र उ व ॥ ॐ
 कृ णं य न क न के म नि म य । नाना त्र त ना पु जा त्रि ना ॥ च
 उ दि प सं ग मः । म ध्व म त्र मा उः । शि व ज स त्व ग त्र वि उ पि
 मा र श्रु म त्र कां य न म नि कि त्र ग स य त्रा प्र त्ता स्व त्र सु ठ
 वि त्रा डि ना र श्रु ग त्र ए स्त त्र स द शे ना थ । त्र त्वे म धु ल
 नि य्पा नि या मि र पु थ म त्र त्र श्रु ग त्र म धु त्र श्रु वि का
 च त्र ग क म ल शि त्र ध लि या र यं का त्र जा त्रा पूर्व वि द हा । त्रं का
 त्र जा त्रा जा म्वा दि यं र त्रं श्रु प त्र ए म त्रा व लि वं उ र्छ त्र श्रु यः वि

[illegible]

911

५ अति ॥ २ ॥

गहि २ अक्षरममन २ अक्षरग सर्वद्वय वज्रयादवदिगम
 नतिवयनसंलग्न २ प्रियुवन उक्त नृकूलाय एता लो २
 गिरवन उक्त नृकू वित्रा २ गिनि युवन नव नात्यवत्रप
 सादित्रः रलितगो नृका कात्र २ अहिनिश्री गत एतूवाता
 उताला ॥ कादिह गालव अलाव २ जतामत्र गलयवन्धन
 भावयः एयमात्र गन संलग्न २ ॥ ५ ॥ गगलवि ॥ ६ ॥
 र्जमानगात्र ॥ कलमवन विविधियक्ष्य हाताः पूजयामि

१ कलमव
 ॥ ५ ॥

तदवगन्ता २ विविचिउ य हा न नृ त्यगी न व नः ७ म नू घ ञ्ज च
नि स्मं ग ता २ उ व जा नृ ता द कः मे षु कि नि स मः रा व न्कु रा
व क षु द य नू यं २ ग ण स स्त्र रि णी त उ मि म हां का ल ॥ उं स्
पु रि स्ति ग व जं स्या हा ॥ क न क नू य म नि त ग न ल चि ह घ ञ्ज
प र्क प त व ड य स्त्र रि ता २ पं र्क मृ ग प र्क त ग न पं र्क उ ष धिः
पं र्क वृ हि ति र्म हा द कं २ मा जा षु ह य दू वा कू नु त स हि ताः
व जा चार्य म नू न्या सा २ दा कि नि ता मा ख णु ता हा नू पि नीः

वीरंवीरं वीरं संज्ञा २ गगनगुचनलकुलमवनकं परि
 मन्तुसुखरुजदातुमहा २ नमस्तं २ उरुवदमहाकाल
 हानरासकनसंज्ञा ॥ ५ ॥ गगनागक ॥ गगनउप ॥ गग
 यनगगियगगयनसुतुती २ अष्टादशगुतुतुनउकि
 तने ॥ ५ ॥ उक्तदेवीकातूनीमामकिदेवी ॥ जगनपमा
 दिनेमयनसुतुती ॥ ५ ॥ अगमयदपूगानवधाने
 जागधनमदिजागुतुतुपदता ॥ ५ ॥ पंक्तिवृद्धसुतुप

१२५
 ॥

१०५
॥ ५ ॥

सुउक्कः सहस्रजागिनीत्रेयाः हृत्पुत्रुहृत्पुत्रुव ॥ ५ ॥ ठाग
त्रुवत्रलसित्रीगगधत्रीयाः एनयिवाकवजसूनापुसूत्र
पी ॥ ५ ॥ नागगन्धत्रहृत्पुत्री ॥ गालउप ॥ एमंकुदहनपं
५ हानस्रुपः पं५ मित्रातः पं५ सात्रीपूजिया ॥ ५ ॥
उक्कदेववलीरायपिउवनवित्र ॥ विलमत्रापकसमया
आनड ॥ ५ ॥ वित्रवीत्रव्वलसहजआनन्दरुक्कनक
मत्रावर्हिदयाआनन्द ॥ ५ ॥ पं५ वूडपं५ आन

१५७ मय र मि ॥ ६ ॥

सत्र पर द वा सूत्र न ल प्र मूदी ग ह द या ॥ ५ ॥ ॐ ञ्ज ४ हं
ह्रीं रवं स्व ध न क ती ग द मा त्रु य ष्ठ ध नि वि ल मा ञ्ज न
दे ॥ ५ ॥ ॥ ५ न र मि ष्ठ ध न ॥ गी ग व ज म य र मि ॥ १ ॥
ग ग म धू म ग ॥ ग त ड य ॥ व ज म य र मि वि ष्व धि त म
गु ल ॥ म द नि व डि ए व व ज व च हं २ स फ सा च त र मी
नि वा स य ॥ मा त्र स य त स ग्रा स क त र स क नि स क हं
रु र ॥ ग हं ग हं हं रु र ॥ ग द्वा प य ग द्वा प य हं रु र ॥ २ ॥

नयहातगवनविशात्राजयहंरुहः उदयउदयः अत्रि
उदय१हासकत्रजियचिंविउकियः वजपत्राकालः
हं वं हं २ वजपं अलसत्रजात्रहं कृतिताग्निः वजविता
नहं र्वं हं २ गगननित्रावधकृतिताग्निः वज
विद्याकृगखलुत्रे २ अकृदिगमातपत्रायवित्रे ष्व
त्रः सर्वविद्याकृगखलुत्रे २ कृदन्तिमलुतत्रायवि
त्रे ष्वत्रः सर्वसत्त्वहियापुमादकत्रे २ गगगुत्रुआही

X
१६
२६
३६
४६
५६
६६
७६
८६
९६
१०६
११६
१२६
१३६
१४६
१५६
१६६
१७६
१८६
१९६
२०६
२१६
२२६
२३६
२४६
२५६
२६६
२७६
२८६
२९६
३०६
३१६
३२६
३३६
३४६
३५६
३६६
३७६
३८६
३९६
४०६
४१६
४२६
४३६
४४६
४५६
४६६
४७६
४८६
४९६
५०६
५१६
५२६
५३६
५४६
५५६
५६६
५७६
५८६
५९६
६०६
६१६
६२६
६३६
६४६
६५६
६६६
६७६
६८६
६९६
७०६
७१६
७२६
७३६
७४६
७५६
७६६
७७६
७८६
७९६
८०६
८१६
८२६
८३६
८४६
८५६
८६६
८७६
८८६
८९६
९०६
९१६
९२६
९३६
९४६
९५६
९६६
९७६
९८६
९९६
१००६

मित्रंगतधत्रीयाः एतन्किन्नीतावजहमिठवधना ॥ ३६ ॥
नागकलात्र ॥ नात्रवतकंकात्र ॥ ज्वनिनिहिताः
यामजहनेहयाः सवज्जिनायासात्रसंगासाः ॥ ना
गधषमाहः वन्धीत्रयासाः ॥ पिउवनत्रायाज्वत्र
धीता ॥ ३७ ॥ नमामिष्टीवन्नुमहात्रावनः ॥ जाग
मृदुनिकुटिगाः ॥ विष्वनाथविष्वयापिगः ॥ वित्रवि
क्रमसक्रादत्रायाः ॥ जागमृदुनिकुटिगा २ ॥ ३८ ॥

रिखनाउग्रपवसाददकनायाविष्टगकित्रनम्
पिंदीगर्ज्जनाककनलयनाःवैलीसकुसा.नाब
रुसत्रना२माधवमायापूत्रदलत्रुक्राःत्रुडपिस्त
वापाठएत्रना२समत्रसमायाःनागविभाहः॥
ननागसंभाहितदेहा२त्रलाएत्रनप्रकृतिगमोत्रि
कयूत्रनापूत्रलूनङ्गनकात्रा२सुलनत्रनागःव
ठिगचत्रनाःनायसूत्रध्वत्रञ्चतवित्र॥ ॐ ॥

गादिविन्दुत्र॥ २ ॥ त्राग॥ पकिमदात्रः पञ्चाककत्रः
रुलयिष्णुनकक्रादुत्र२ मात्रादिवत्रुनादिसगनप
त्रीवात्राः ध्वनयिमात्रादिविन्दुत्र॥ ३ ॥ त्राग॥ ३ः
ह्रस्वात्रविष्णाककत्रः रुलयिष्णुनकक्रादुत्र२ मा
त्रादिकूव्यत्रादिः सगनपत्रीवात्राः ध्वनयिमात्रादि
विन्दुत्र॥ ४ ॥ त्राग॥ हुं ह्रस्वत्रवित्राः रुत्र
यिष्णुनकक्रादुत्र२ मात्रादिगुणूत्रादिः सगनपत्रि

वात्राः धंसयिमात्रादिवृन्दत्रे ॥ ५ ॥ राग ॥ अष्टमका
लहर्कित्रो जवीत्राः रुतयि अष्टमकाह ॥ २ ॥ मात्रादि
अष्टमकादिः सगनपत्रीवात्राः धंसयिमात्रादिवृन्दत्रे ॥ ६ ॥
राग ॥ ने अष्टमका लनी लद लुवीत्राः रुतयि अष्टमका
काह ॥ २ ॥ मात्रादि कप्यादि सगनपत्रीवात्राः धंस
यिमात्रादिवृन्दत्रे ॥ ७ ॥ राग ॥ वायुव्यका लमहाव
त्रवित्राः रुतयि अष्टमका काह ॥ २ ॥ मात्रादि पवनोदि

सगनपत्रिकाः धंसयिमात्रादिविन्दत्र॥ ८॥ राग॥
उर्ध्वदात्रउफिषवीगाः रुतयिजनकक्रोर२ मात्रादि
उक्तादि सगनपत्रिकाः धंसयिमात्रादिविन्दत्र॥ ९॥
राग॥ उर्ध्वदात्रसूत्राः उवीगाः रुतयिजनकक्रोर
त्र२ मात्रादि सूत्रादि सगनपत्रीकाः धंसयिमा
त्रादिविन्दत्र॥ १०॥ दशदिशदशार्हकात्रः पुनमा
मिदशक्रोर२ आश्वपूत्रदानपतियात्रः मातवि

श्रद्धयसंराग्यः नां कृयिदा मे सम्यत्राया २ कृति ७ य
७ गजं च मवी एषिगः कृति ६ मत्रुपि शुत्र धत्रा २ मा
५ पूती सग कपात्र वद्वांगः पा न पत्र शुत्रु म्नित्र ध
त्रा २ पं कृति नवत्र म कृ ग जालं कृ गः स्वट मृडा ज्ञा
एत्र न शुषिगा २ ज्ञाति कात्रि इयि ज्ञाति र्क वा पयिः
व्याघ्र च मनिव्य सन कृ कृ ग नू २ न लणि त मा ल ज्ञा
त्र म्वा सस्यत्रः दिव्य च कृति नी कृ ग न ह द या २ ऊत्र म २

१ वसुधा ॥

मातृउरुपयीसत्रनः गभवन्निपत्रमायवजगीता ॥ ३ ॥
तागवसक्त ॥ मातृउप ॥ वसुववसुधमा ॥ पिगवर्धमक
मूत्यः विविगज्जाएतनः एषनियारकनकएद्रुपठ
वामकत्रधत्रीः दहि नष्टएयमूजाः स्वगात्रा २ उं वजि
एवहंः शात्रसागत्रष्टक २ उं वजिहृदिगिः कृमिदनि २
मदनिवजिरववजवन्धहंः विठ्वएतनसयत्रा २ नि
सात्रएवकु २ उं हिमागत्रिः ॐ नुमर्घपूजाः गुणका

किं वक्तुं सत्त्वपूजयामि २ मनु लकर्मस्तु साधय २ साधय २
क्रीं क्रीं हं ॐ स्वाहा २ नो मिश्री धन इति नः पातात्र वृत्तं ।
विविध उपाहा लं पूजयामि २ शाश्वत सिंह मोतिः मा
त्रवत्र हर्जनः दविश्री वस्तु च गाः मनु लत्रि व्यामि २
सगगुत्रवत्र लः सितगगधत्री याः गभवन्निज्जा वा य्यः
संघसयत्रा २ हर्मिष्य धन विधिः न स्पष्ट त्रयः सर्वस्तु
त्वद्विद्या संसात्रगत्रनं ॥ ५ ॥ त्रागहेतव ॥ तात्र इय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निर्माणा मूज मध्यग गङ्गाः परं मूज मय पत्रि पूः
त्रागा २ विध मय गहि गः परं पत्रे वाः नी ल व न्तं त्रं ज
न सित र सी थ पि गा ॥ ५ ॥ हं हं कं हं वं जा वा र्थः म
कु विं न्या मि गाः क र्म व डि स हि ग पु ह्य हा गू पी २ व ज
मि ष्या हि म थ प त्रि पू र्ण ह तु नाः ह व स मू ड ग त नः ति
क र्म ह त न २ पू र्व द त ग ग प र्ण स ग सं त्रा डि गाः पं र्ण
वि ण मि र दि त वू ष का य २ द डि न द त ग ग व ज व स म

समग्रपात्रि हवनसमग्रसः उपायविशुद्धि रपक्किम
दत्रगगः वीरवस्त्रविताः धवलवन्धनसहस्रजिगा २३
उत्रदत्रगगः घण्टासनादिगा २ हानस्रगृपिनिः वि
वृत्तननि २ अग्न्यादिदत्रगगः स्वतापिगात्रनाः स्या
मवर्त्तित्तपिपात्र २ पूष्यविंन्याशिगाः विधमयपू
जिगाः पुनमासिवजसस्यः शिलसाधीगा ॥ ५ ॥ गा
गमधूमन ॥ गात्ररुमान ॥ समित्रयहं एकः कमल

समित्रय

निचत्र ऊत्रः सुवर्त्तिवत्र ऊत्र ऊवने २ पसूति तदिन
 मुनिः सायत्र एते त्रीः मरु कण नृश गत्री न गति ॥ ३॥
 उं आहं हं उं आहं हं उं आहं २ मृत् मात्रया पुत्र मर्त
 षिग मृडा। हां हां कात्र विष नयद मृषं २ कत्रिग कूत्रि
 ण द्य ६ मृत् गत्र दिह उः हृत् कृत् आलिह पदं २ विष्ण्वि
 पद्म सियः मृत् व नृत् न त्र रयः स खत्र स्वहि य नादव
 त्रं २ दणदिग पुसादित्रः मात्रयि त्र ष्यत्रः त्रि व कृतीष

॥ ५५ ॥

न वेद मुख्यं २ समल समल सुह वाचि यनादिः नाठ क
गगन समल सुवे २ भूव धूव पयि सुयिः सह ऊणी सुः
मत्रः ॥ नृत्ति गगन समल सुवे ॥ ५५ ॥ गगन धूमन ॥
गात्र ऊप ॥ वऊ धत्र पर्य वूऊ मूनी वत्र लायाः गऊ मांस
नर सुस मूजा २ मल्ल सुग वाथ नासा ऊतिः वमिव
गळ्व गवसमं ॥ ५५ ॥ सासा गवऊ सुग मे पुय सयः
मल्ल मल्ल सुग याग या मि २ सिहा सुन स्ति ग पूरि वे

उडुमिवर्त्तः जृही मथ सुखरु लदा यनि २ तत्र धृ कपि
गवर्त्तदहि न वत्र द क म त्रैः जृस्वा त्रु र वि ता डि ता २ म
हाम उल ह मि सु ग ना य हं १ जृ ला त्रि क द हि जृ डि सि
दि २ ध म्म व डि त्रै क व र्त्त म यू ता स न स्कि तः १ ध्म न मूः
जा ध त्र जृ मू ना थ २ सु ग पा न न मः सा ध य शी ध य दा
न प मि स त्र उ त्र उ २ क म्म व डि डि न व त्र जृ ए य मू जा ध
तः ग त्रु जा स न स स्कि त त्र य ना २ ग त्व ह्य न वि ग्म न सि

[illegible]

१२५५॥५५५५॥

१७५

गात्र इह मान ॥ विचक्रत त्रविष्ठा मिमन्त्र मातः । पिनि
आननु मूत्राणि धत्ता २ वज्र वा ता हि आतिंगन संवल
नाना लक्ष्मि महां कथा ॥ ५ ॥ गेनाहं २ गेना गेनाहं ॥
नील वर्ण चतु वक्र पुनि मुखे पि न्यतत्र यत्र मानि त्र
मूत्राणि धत्ता २ विष्णु वज्र अर्द्ध चतु । जठ म कूठ धत्ता
हा ७ आरत्र न ७ स्वरा ए वज्र घण्ट गज च मणि मातः
स्वर्ग धत्ता २ वित्र मान त्र मूत्राणि धत्ता २ कत्राणि कथा

X
१२ विसंज्ञा ॥

प्रतस्त्यागधनः प्रिभूत्रवक्रुणीत्रधत्रा २ दिगंविदिगं काकास्या
दिजन्मदादियात्रः सहजकाननदुमूत्रुतिधत्रा २ नमामिश्री
यक्रसम्बत्रः गतगुत्रुचत्रनेशत्राविगा ॥ ५ ॥ त्रागगध
त्रहेवि ॥ तात्रजगि ॥ ६ ॥ आ ४ हं रुठ् ष्ठुं स्वाहा ॥ मनुविस्
षडुवात्रुत्रपूजापूजितपूजसंस्कारा ॥ गगसत्रुपसंर
यंउत्र ॥ ७ ॥ स्वस्वस्वाहितहत्रीवल्लिपूजा ॥ २ ॥ घघघा
गय २ विघ्नहत्रः पक्षमियात्रसपक्षसहलि ॥ पंक्षज्ञान

सर्ववत्रिंशत्सर्वयुक्तग्राहकसहस्रपुत्रःपि सा वत्रष्टयं
स्मात्तुल्यं (७) क (७) कि निद्रयः। अष्ट स्म षष्ठः। ॐ नमो ब्रह्म
ली गृह्ण गृह्ण हरे २ समया आत्रुक्तु दानपत्रिः सर्वसु
खसंप्रदसाक्ति २ जल्लेखलेख हर्षं धर्मपत्रथः। अष्ट
७ मातिका एव कुत्र दानपत्रि सर्वकार्यसिद्धिः। मना
त्रथ सर्वसुखपदसाक्ति २ आत्रसंसाहः। तथै गगनवय
ने। स्वहायकात्र एव कुत्र ॥ ॐ नमो ब्रह्म ॥ १

二五

नागविराज ॥ नागजा मा ० ॥ हं हं हं दह धत्रुः संसात्र न दह ध
 त्रुः दं दशालिं ग न जा ग ध त्रुः ह व जा उ क्र ग ना हं ॥ ॐ ॥
 ह व जा उ क्र ग ना हं हं हं ॥ ग ना ग ग हं हं हं ॥ स्र न त व डि ग
 व त्र न व ने २ कू स्र म वी त्र य न द ह ध त्रुः २ ल व वि म कू ग वि
 स्र ह स्र ॥ उ क्र ग न आ का ति या त्र २ न मा मि २ गी ह व जा ।
 उ क्र ग न आ पि धि या त्र ॥ ॐ ॥ नाग हे त वि ॥ नाग इ र्
 मा न ॥ पु वि स य र ग व न म हा मा ऊ पु त्र य ॥ द स या नू ल त

इति स्यात्

वाधिपदं २ ज्ञासत्रहयवश्चनमावय। पत्रमासृगमय
पत्रमागृह २ ७ हिवत्समहायानमयागम। वाधिविका
मृगपानलकै २ देसपिउहमलमचत्रगृहः गथगानूह
त्रवाधिपदं ॥ ५ ॥ उंसर्वगथगगयूजनयान। जाग
मृशपापगनू २ पय्यवागदसिष्यापत्रिवक्ता। कसत्रकू
लिसयत्रिकमत्र २ कूहमउदकमकूठासनकमत्राः ७
नकूत्रसमयावाय्यपदं २ मनुष्यजनदर्पनसत्रउप।

१ सप्तमः ॥

दधवत्रगतिपदराग्वत्रं २ सतगुत्रूचत्रलकमत्रप्रुषद
प्रापितआननुमहासुखं २ एनकिपिधूमतिमुनिना
षूतन/पुनमामिसहजाननुत्र ॥ ५ ॥ धन/पुमादित ॥ १
रागषगममाग्री ॥ नात्रअकमा ० ॥ सहजसंतात्रुहदत्र
नत्रायाः प्रिउवननाथः दहिवित्रासा २ ॥ ६ ॥ हंजयि
महात्रसः शुक्रातिष्यकैः कमत्रकूत्रीसहं/आगसंलग्या
गमनेसत्रूपिनिः दयीविष्वव्यापिनी/किदकित्रमना

॥ अक्षय ॥

का आतिंजल सातिंज तः। इन्द्र वाजयियायिया २ वड सम
 क रुती सिता। क पूत लावन यायीया २ मातिया यिन्धन
 सात्रिज तः। गहि वात्रुखा जयीयायिया २ यख नउक केः
 त के २ सुख सुख न मूनीयायीया। नित्र सुह अंग सदा क
 यिया २ गहि ज सतावन। पुन मा मिया॥ ॐ ॥ ता गठ
 गम त मा त्रुण॥ ता त्रु मूत मा ०॥ प्रि पूत पु मथ नि। लवी न
 क ता पी २ दे मा आतिंग न। सुत गठ गम मि॥ ॐ ॥ हदिक

॥ प्रि पूत पु मथ ॥

वि॥

ॐ सितसाः इदिगसुनातिः अनूहासदकिदक्रियागिरत
दिगसात्रुपीनिः सिधुसुहगममिरत्रुधिलप्रवनेः पूति
गहवर्क २ ७ ७ कात्रः शुषिगकूत्रीसः गइहवत्रास्वउ
पायपियूर्यं २ वगसुर्कवकुः एमतिगूनादिः जूंन्यान्व
संराव्यः महासुखत्रीना॥ ५ ॥ गगविहासः गात्रमा
०॥ धत्रधत्रधूधत्रधत्रधलधधत्रय २ वक्रिसित्रः मदर
वज्रधकसमय २ कूटत्रुयागसंवित्रवत्र २ कूट्र २ वज्रध

धत्रधत्र॥

समय २ त्वं आलात्रिक कर्तव्य २ कृच्छ्र २ देह धनः । स
मा कत्र सितक मत्र धन २ वज्र सूर्य आ ज्ञान ग माः विधम
य समत्र संदाउ म हो २ क ७ क ७ क मा ला धनः । त ला धन
वत्र वज्र सित २ सा सा ग नि सा त ला व वत्र माः सा सा ग सह
ऊ स ला व धन २ उ हि उ हि डि न डि क समयः का य नि व
धन नू व ऊ धन २ रुं रुं झां झां पु हा धन स ग गाः म व त व
पु ग य न व मा ऊ २ रुं रुं । आदि न च ल न वत्रः पु न मा मि

[illegible]

मनुत्रहवती नारियधनूरवदागम। कादिलग्नसम्बत। पु।
 यिसयी सन्य एवकात्रा रहमवीत्राहित्र। वउ वात्राहि। तु
 क्रविष्णुदधि ज्ञाना २ गमवन्नित्री तावउ ऊ गिया २
 सगगुत्रवत्रने आत्रा २ स मया आन २ रुत्रीलात्रा
 मनुत। सम्बतवउ वात्राहि। ॐ ॥ गगलमउगित्री॥
 नात्रजति॥ वउ २ मादित्र। जहिनिबभुत्रि। ॐ थ कात्र
 ज्ञघसिद्धिगनसंलाय॥ ॐ ॥ जेया हत्रववउकवा

१ वउ २॥

ग्रीवाः समहंभकादित्रः। नित्रवर्त्तसहय २ पंक्षी तथगत
 क००० धत्रीया शुद्धि २७ ह्रीं वा य उ धत्रीत्रः। सित्रवर्त्त
 मृत्ति २ ०००० कात्र जगत्कृत्ति हृत्तवः। सहज सहय २ सर्व
 सह उ धत्रीत्रः। उ मातृत्व द्वां ए २ मातृष्टा हृत्तव हृत्तवः
 त्रुत्त मृत्त क०००० ए नति एम स्वा मिनीः। जलवर्त्त सहय
 य॥ ॐ ॥ गगल एम उ गित्री॥ न क गत्री नात्र॥ वक्रिकू
 ०३ ल कलि गो वक्रः। म वत्र हृषितः। गित्री वत्रुत्त नत्रसि

+
 १ वक्रिकून्त॥

तमात्रा २ सत्र चक्रि चक्रि त्रैयाः एस्मयि एषिगः गगन पात्री
वन्द्याता ॥ ॐ ॥ एस्मयि गिह त्रैवा दमात्रा कोत्राः श्रु
नाथसित्री सम्यत्रा २ वज्रक गो गक हाथ धत्रीयाः क ७४
दीत्र हं स्व द्वा ए २ सस्म ग क गो नीः क मत्र बी हा सि ग्य लो
महा स्म स्व मत्री प सा ३ २ वज्र वात्रा हि आलिङ्ग न सम्यत्र
नां ॐ यि वरु बी ह एं ए २ वा कृत्री कोत्र यि क्रि द नी ह त्र
वः ॐ ३ ह व र न न पु सां द ॥ सहज संवाधि त्रैयाः गभव

१॥ सुप्रसिद्धम् ॥

किं कर्त्तव्यम् । ह त्रु व व त्र न
ब नि त्र व र्त्त वा त्रा । वि त्रा
ग द षा त्रा स क त्री ॥ त्रा त्र मा
आ । उ कि ण क उ पु णा क वी णा न
स ने क २ ग इ न क गी र्त्तः व त्र न स नो ला ॥ ५ ॥ त्र ना र्त्त २
ग ना र्त्त २ ग ना ग त र्त्त र्त्त ॥ प र्त्त वृ षा ल्म क सर्व ज ही यः
प ष्ठ र्त्त ना ग कू चि त कू दि व्य २ ज गृ हिय कू म हा स र्त्त नाः
मा २ नृ ष्ठ कि गि त व त्र न स नो ला २ ॥ अव क या न स स त्रि

लंगनहृत्

५ ॥ त्रा

तमभुत्रवः

नादिनतुक्

५ ॥ त्र ना र्त्त २

क सर्व ज ही यः

म हा स र्त्त नाः

अव क या न स स त्रि

१॥ गिदगसं॥

गहिरुयं २ माथवलिवत्रजृथगत्यवत्रीवत्रः वाचिव।
त्रीवत्रवाचिगुलकं २ ॥ सुनीदानाहवेषूययस्य २ वध
किं न उत्रापत्रीमाचिगगनावृद्धं २ वाचिवीलावनया
यीपत्रीमिः मिदंसयत्रा॥ ॐ ॥ त्रागहृप्रमिथनाग
क॥ तात्र ७ कगत्री॥ गिदत्रगं त्राहृदिनकलम ७ त्र॥
ताजिगगिहवनजननीः त्रगगहृउत्रगिनीयत्र
मात्रवउत्रगगनकदनि २॥ ॐ ॥ देवीकत्रमिकया
त्रधत्रा॥ ॐ ॥ एषिगनलमित्रमात्राकमत्रकृतीस।

इयिगात्रा वाजयिनाचयि। सहजसंत्रुपिनी॥ ॐ ॥
वज्रसिंहाकल्लिकुण्डलाकल्लिकुण्डलाकल्लिकुण्डलाकल्लिकुण्डला
वज्रकल्लियाउमेषत्राचत्रालनापूत्रहवनि॥ ॐ ॥
एवमुदयानत्रकेजधत्रकरदाहिनीग्वानकत्राया,
लावालावबीवर्जिगः। नृनृत्रगगनसंत्रुपिनी॥ ॐ ॥
प्रमपवज्रप्रदसिंहागधत्रीयाश्मवयिहासकूती
गः२नृनृत्रसिंहिपुमाकुपदायनी। पुनमासिमीव

१६ नसिग ॥ १६ नसिग ॥

॥ इति ॥

उपका कृति॥

किं न भदगं सूर्यः संहास्य वनि॥ ॐ ॥ वरुवी ह त्रुषवीः
सात्रं ज्ञाना यनः गत्व य वनि॥ ॐ ॥ आ ग क र ॥ ता
न मा ० ॥ जयं क कृती दवी त्रुव देवी धन नः स यत्र ह
ता ह्यत्र वदित वत्र ल॥ ॐ ॥ ग ह ग व मि पा डू क म
त्र महि मलि ग र ने उ त्र त्रु न डू न का ता २ हा ७ ज्ञा ह
त्र ज्ञाः ए त्र न वि ए वि ग ना पु त्र घ ६ उ त्र ता ता २ गि नि २
गि न य ७ न य ना ग ना ॥ ॐ ॥ सिल न सि नू त्र धा त्री

कंजननयनः कलुत्री कर्पूत्ररत्रयिताम्बुजा ॥ ५ ॥
कत्रगिकपात्रधत्रीः मूत्रमात्ररविताः सुखखडां
गकपात्रधत्रीन ॥ ५ ॥ एनयिसूत्रगवजवाक
त्रीदासः शीकजजागिनीः वत्रदपुष्पद ॥ ५ ॥
गगवितास ॥ नात्रमा ० ॥ उदितामत्रलयः पुवनधू
ताः बलसूहा मककासगता ॥ ५ ॥ धात्रइसू
त्ररयनिसावत्रीगाः अषयनित्रंजनमाकुगताः

उदितामत्र ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अहंकारावधि ॥

पिवमि॥ उपरुनओगिनिलवनजात्रीरकमत्रकू
त्रीसःघनकलरुवीयात्रे२सासूगघनघात्रा।क्रोवी
क्रनात्री२वउसूर्यइयिःपक्रमानसंरुद्धा२रनयि
उओत्रीहमःकूडूवीत्रा२नत्रयनात्रीमाडउउरय
वीत्रा॥ ॐ ॥ गगकुरु॥ गगउय॥ कायित्रवंसावा
जित्रविंन्या॥ ऋनरुगसर्वदेवःप्रितुवत्रिना॥ ॐ ॥
ऋनरुमरुजीत्रदात्रकसिजा। रुदित्रऋदित्राहि

पक्षान्दे २ उदितलो यन्डा नवी अकां ला २ हा सित्रल
विमजि गगन इवात्रा ॥ ॐ ॥ गगमज मूनां नृप
गकि गगन सिषत्र माडः पुवन हं हात्रा ॥ ॐ ॥
पुवन पंक्षत्र नृकूलात्र वन्ध्या विपत्रिणि कनूयः
दात्र कसि जा ॥ ॐ ॥

1831

1831

1831

1831

1831

2831

I

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथ श्रीमद्भगवद्गीता



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

स्वातगुभाजुयागसक

ॐ नमः शिवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ **त्रागरेलविग** ॥ **मत्रडय** ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ **कागारुर्वः** मात्रात्रिपूकुदन **अवल**
वीत्रं रसुत्रयि **अनक** महाकाठनाया **अल्पियविघ्न** स
मूहत्र ॥ ॐ **हं ग** **स्वयं** **उय** **र** **सर्व** **इ** **सु** **त्र** **की** **त्र** **य** **हं** **रु**
ठपापहत्र **हं** वज्रकैलयः **न** कलवीत्र **आ** **हा** **का** **य** **वा** **क**
चिह्नकीलयगिर **शी** **व** **हु** **वी** **त्र** **आ** **त्रा** **धिया** **त्र** **अ** **नू** **ह** **त्र**
सिद्धिमा **अ** **रु** **ल** **दं** ॥ ॐ **॥** **पूर्व** **स** **गा** **वल** **म** **हा** **वी** **त्र** **कू**
उ **दू** **व** **रु** **का** **ठ** **त्र** **पं** **र** **उ** **त्रा** **व** **गु** **त्र** **रु** **स** **ह** **अ** **न** **य** **नः** **द** **वा**

किंसेसा

विषमिगनग्रांठायति॥ ॐ ॥ दक्षिणपीठावलमहावी
त्राकनकवर्णगुणमयं २ महिरवाहनमहात्रोदनी
लदधुधत्रादुष्टपुत्रादमर्दयति॥ ॐ ॥ पश्चिमत्र
कावलमहावीत्राकनकवर्णस्वप्नयाधधत्रं २ कमला
सनस्त्रिभिर्गदहृष्टायाविषमिगनकीलयति॥ ॐ ॥
उत्तरत्रयं मावत्रं स्यामवर्णगुणविंशत्रयं २ उत्तरं ग
सनस्त्रिपीठावर्णयुक्तादगनगर्जयति॥ ॐ ॥ दह

* महाश्री उ

दवि

न कामदवी माहवजि/ कुलु नुवर्त्त कर्हि पाणु धत्रीर
का म सन महा जोड शुक्ल धात्रि/ दहनाधिपति गण
कीलयति॥ ॐ ॥ ने जय का ली पिठुन वजि/ कन
कवर्त्त गनुया गनुपी २ ने त्रा सं महा ली मख प्र पाणु
धत्रा का पूर्व साधिपति मर्दियति॥ ॐ ॥ वायुव्यः
का ल दवी त्रा ग वजि/ त्रा हि ग व र्त्त कर्हि पाणु धत्रीर
मृग सन वायुपता का सं धनः स्वास नाधिपति की ल

५६

यति॥ ॐ ॥ ॐ ॐ न वत्र का न देवी ॐ व्या व डी ॥ ॐ न
वर्तु ग नू का र व व न्त २ वृषा स न त्रि न य न त्रि ॐ न ध
त्रि ह न वि प त्रि स न व ॥ ॐ ॥ द हिन न य न उ ड् दि
डि न व लु त्रा व न स फ व क्रा लु या त्र य त्रि २ व क्रा त्र वि ष
शि गृ ह मृ ड् स य त्रं र व व त्री मा त्र ग न सं वृ न्ति न ॥ ॐ ॥
वो मा ड् ॐ ध द क्षि त्र का म न य नं व लु त्रा व न स फ त्र सा
त त्रं पा ल य त्रि २ वृ षि ॐ स त्र म न ॐ व न ग म दि स य त्र

हवत्रिमात्रगनमाशकत्रं॥ ॐ ॥ दहदिहदाहहंका
त्रसंरवा। पुनमा मिश्रवद्यमहात्रावर्ग २ असावत्रि
पूत्रंगदानपतित्र। सर्वविद्यनिवात्रगतिद्विरुलद॥ ॐ ॥
श्रीवज्रवीत्रात्राधियात्रात्रनूरत्रात्रिद्विमात्रुल
दं २ हं वज्रकीलयत्रकलवीत्रात्राहाकायवाकचित्त
कीलयन्ति॥ १ ॐ ॥ धनत्रुत्रुत्रुयाय॥

१ नीलवर्णः स्वर्णः केशः

गगनधूमग ॥ गगनधूममान ॥ नीलवर्णः स्वर्णः केशः केशः
नयनः महावीरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः
शालिङ्गः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः
गगनगगहं हं हं ॥ दहिने स्वर्णः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः
मात्रयुतः संगः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः
श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः
पिनाः गगनः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः

प्रभादिनराजः

वर्णः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः

५ सिचि कु ति मणी ना ५५

गाः पर्जन्यं न वरम कूठ धरा ॥ धरणी मधुसूत वामजा
नूतसु सव्यपाद सुसंस्क्रिताः पायलभा पूत डिमि डि
नीकागाः सुता सुत पूति ग अ च त्रयीता ॥ नमामि शु
वमुमहा वाषा अमुमहा एयदुःख हननः सत्रगर
त्ययि यत्र ल कम लग्न वकि
नागकलात्रः षठकं कात्रगात्र ॥
मूख षठ एउ चत्र नम लि
वउ घ षठ अत्रिः नत्र शि ल

उमिदिषन ॥

५५/२/२०/२०

गीगा ॥ ५५ ॥

वचनः प्रिय

मा एव नाः

न शु गे ला क

विजयाः विष्णुनाथविष्णुव्यापिगारवृद्धधर्मसंघपालिप्रति
ज्ञानः पादशत्रुनक्षिणउमामहर्षेत्रः विष्णुनाथविष्णुव्या
पिगारत्रकृष्णिनिगोयनक्रूरुणरायाः प्रगिवृत्तदणक्रा
रुविद्युसंज्ञात्राः रवः अयूरुक्कध्रिमाससंज्ञात्राः वित्रंविक्
मपुक्कलिगकित्रन्मरपत्रशुपाशधत्राः लावनदहाः स
वक्रारुविद्रुपादसत्रनाः दानवनाग्यमानवदहाः विर
हंरुधर्मसंयत्रसनाः कायवाकचिरुधनधत्रनाः कृ
विरुदहानिर्मत्रसत्रिनाः २ एवएयहत्रन्मगीगएवकि
शगगुत्रुचत्रनक्षित्रंगतधत्रियाः ॥ ३ ॥

नागगन्धर्वहरेलव॥ गात्रजति॥ पूर्वकृष्णवर्तः॥ ॐ
 नेकाः॥ ॐ उरगपुतिगनकीलयति॥ दहिनस्व
 वामगर्जनीपाठः॥ विष्णुवर्तनयतिविम्वत्र॥ ॐ
 यद्यथागय॥ सयलविष्णुहर्त॥ नाथयद्वृत्तसुहर्तः
 कित्रय॥ सर्वपापहर्त॥ शुभजसत्वाश्चाह्वय॥ ॐ
 दक्षिणपीतावल॥ कलनादिकाः॥ उन्मवर्धनत्रवि
 ष्वहर्त॥ दहिनस्व॥ वामगर्जनीपाठः॥ विष्णुवर्तन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पणिवीमत्र॥ ॐ ॥ पण्विमत्रकावलः नेज्जका
वन्ननाउ हविष्महनेरदहिनरवप्रवासगर्हनीपा
ठम॥ वीष्वरवनपणिविमत्र॥ ॐ ॥ उत्तरस्यामाव
लः वायुवकागः उकाचिपानिलविष्महनेरदहिन
रवप्रवासगर्हनिपाठम॥ वीष्वरवनपणिवीमत्र॥ ॐ ॥
सृष्टुर्दुष्टदुष्टादिशिदुष्टाकित्रलरविष्मनाथविष्मः
व्यापवत्ररुक्मादिहनिहत्रवउमाहलः वीष्मवीष्म

प्रविशयया प्रोक्ता ॥

ने वा पुरुत्रं ॥ ॐ ॥ राग हंदात्र ॥ तत्र मा ० ॥ हं काल
हं जातः ॥ ॐ ॥ उ नी ले ॥ युनि सम देहा २ ॥ प्राकाल कलन
महाकल का ला माला समाकूल ॥ ॐ ॥ जयंतु जृच
ल ॥ जनेक मृत्रुति ॥ दि वा सूरन नत्र वन्दिता ॥ स्व ॐ वा ण ध
हा ॥ जगत्ताथ जगत्तापि नः ॥ महाकाटताया ॥ ॐ ॥
ज्वनि निहिता वा मजानू ॥ धालवदन ॥ नि नितायना २
ककताजा एव ए य हन नी ॥ निषिलवी च ह का ॥ ॐ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१ नमो भिजे व

बुद्धाह त्रिहत्र सदेव माता ॥ उपदत्त नः हवीना २३८
दिपिदिना धनः सादिक नृषे हत्रा ॥ ॐ ॥ विविधि
आ एतत्तु रूषिताः दिव्यत्र लम्भोत्रि २३८ गत बांकि
नः सर्वसंपद जडि सिद्धि वत्र पदाता ॥ ॐ ॥
नाग रूत्रा ॥ नात्र उप ॥ नमो भिजे वत्रु महा नाष न देवा
सुमंत्राणि वाप एयना गनी २३८ गत पत्रीता नत्रः एय
२४ स्वहत्र लम्भः सातत्रि पूक दनः गत्रु ना गनी ॥ ॐ ॥

मन्त्रलक्षण यत्रु यत्रु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

हं हं धरति मनु प्रापतीः त्रयिष्ठाणि मनु लः जानूया
द नमः ॥ अचेलवीला ॥ गजघनजि मूगः नीलवर्ण
हंः निविदघनक्रोधं लाकवीलं ॥ दहिनस्व अउ

आतिविजालनः प्रिरवनकंपितः स्रत्र अ स्रत्रं ॥
उगर्जनी रजः शक्तिपाशधरः इदं न इत्तु त्रिषू

वन्धकलनं॥ अग्निघातनादीनां शोडशयंत्राः त्रिभि
रायनैस्तैलकणत्रयी॥ इष्टस्वप्रयुहात्रः मालवत्र
मर्दनीः दण्डीगमालस्तन्त्राण्यकलं॥ पंचगव्यग
णः स्रुतगसंहत्रनीः वीक्षुविधंसनः अत्रवील॥ च
अग्निमध्यपत्रमादः वज्रुत्रुणत्रनीः एतयिस्त्रा
वज्रुत्रुणत्रनी॥ ३ ॥ त्रागवित्रास॥ त्रात्रउपः॥
कृत्रिस्तणलाजसंः एदमहात्रसाः अदय अत्रुत्र

अत्रिस्त॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

三

ॐ शुद्धपथमनामावास्ता

यूनिः देह प्रण संत र वि विवित्र न न म नि म कूठ र वि
गा ॥ ५ ॥ नो वयि त्र श्रु च त वी ला ॥ ग ना वो आ न
उ वि ता स यी ॥ अ व त ॥ ५ ॥ यो म उ ह वं वि मू मू डा द
न न र ये ह्य अ ति ग ल ॥ अ ह य म हा त सा ॥ ५ ॥ मा त
व उ त र द प्य नि रि व ल वि च ह का र त स्य नि हि ग र व ५ ग
रु नि या र्ज ॥ ५ ॥ वि त्रा मा ग वं उ ॥ ए व ए य क लो र त
वि स गि रू ग वं उ ॥ ग ग ल ति ना ॥ ५ ॥ **ता ग के जा दि** ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ हंकात्रसमूहकल्याणतत्समाः तत्रमकुठम
 श्रुतः श्रीचण्डीवीरः एवमयहत्रनीः श्रीद्वयवजिनी ॥ ५ ॥
 आलाविरचितः श्रीपाठाध्यायीयाश्चिह्नवचनवन्दि
 तः श्रीचण्डीवीरः ॥ ५ ॥ यंलं वं हंकात्रसं एवमध्याः
 सहस्रसुलक्षितसमः साहित ॥ ५ ॥ वित्रीवीणापति
 संकत्रवीरपतिः सुगीवन्दितचत्रणः मात्रैर्गन्मदि ॥ ५ ॥
 गगनसदृशवर्णः साहितदेहाः पुनयनध्वनिः पु

एव नवी त्रा ॥ ॐ ॥ अव निनी हि त जा नू षा लिंग न
 उ यि ता नू मू लु मा त स हि तः उ क्र मू लु ध त्रि या ॥ ॐ ॥
 ग भ व नि हा न व जः व लु वी त दा सः गु न नि धि च त्र हा वं
 दि त ध त्री या ॥ ॐ ॥ त्रा ग वि ल स ॥ का त मा ० ॥ हं
 का त सं ए व गी व लु वी त र त ल म कू ठः सा हि त मि त र
 नू मू लु मा त गी व लु सा हि त र गि त्री च न इ क ग न ग
 मि म र द हि न स य गि क र व अ र मा त ग न स र्वी सं ग

ॐ
 का त सं ए व ॥

सिं धु ल म लु ल य ॥

ॐ क २॥ वा म स य पा ठाः ३॥ वं चि तः ॥ श्री ह व व जी द वी ।
आ तिं गी त २ वि ष्व ना थ । वि ष्व व्या पि त वी त २ ॥ ध त्रि णी
नि हि तः । आ नू पा द २ बु ष्ठ ण कु ह त्रि ह त्र पा द तः । आ ग
म प्र ष्ठ वः । मा ह कुं दि ता २ ॥ पू र्व द त्र ग तः । स गं व त्रि त २
द डि न द त्र ग तः । पी ता च त्री तः । य कि म द त्र ग तः । त क्का
व ती त २ ॥ उ ह त्र द त्र ग तः । ष्ठ मा च ती त २ । अ न य
द त्र ग तः । मा ह व डि २ । नै म ष्य द त्र ग तः । पि ष्ठ न व डि २ ॥

वायुवायदत्रगतः त्रागवक्ति २ ॐ ममलदत्रगतः ॐ व्यावृत्ति २
 वउवीत्रमध्याः शिवउवीत्र २ ॥ गिदगहवनः दप्यनाभि
 ग २ गमवन्ति पमंड्रवजः गुत्रूध्मने २ गगगुत्रूवत्रलः क
 मलश्रात्राध ॥ ॐ ॥ त्रागककल ॥ गत्रइर्मानः ॥ ॐ
 वनिनिहिगजानूनीलसमदहाः केकलपि नयनः रि
 षगवयने ॥ ॐ ॥ गनाना २ हं हं जात ॐ चलक्राउता
 या ॥ ॐ ॥ निविधयनयूनिः ष्वरि तमंल २ वा ॐ रव

X
 ॐ वनिनिहिगजानूनीलसमदहाः केकलपि नयनः रि
 षगवयने ॥ ॐ ॥ गनाना २ हं हं जात ॐ चलक्राउता
 या ॥ ॐ ॥ निविधयनयूनिः ष्वरि तमंल २ वा ॐ रव

ॐ वनिनिहिगजानूनीलसमदहाः केकलपि नयनः रि
 षगवयने ॥ ॐ ॥ गनाना २ हं हं जात ॐ चलक्राउता
 या ॥ ॐ ॥ निविधयनयूनिः ष्वरि तमंल २ वा ॐ रव

ॐ वनिनिहिगजानूनीलसमदहाः केकलपि नयनः रि
 षगवयने ॥ ॐ ॥ गनाना २ हं हं जात ॐ चलक्राउता
 या ॥ ॐ ॥ निविधयनयूनिः ष्वरि तमंल २ वा ॐ रव

॥ १ ॥

॥ १ ॥

ॐ ध्वनीः प्रह्वनवीलाः ॥ हृतिहृत्रुक्काः ॐ उवउ मा
लाः मातवउत्रगनः सउ हयहृत्रुक्काः ॥ विविचित्रैते
नमोतिः त्रकिगदेहाः २ उगनवीवाकिगः वत्ररुलदाता
॥ ॐ ॥ त्रागगध्वनरैत्रकी ॥ त्रात्रउय ॥ प्रिनीत्रायनः
यउः उक्कावीहालाः कत्ररुषधिध्वनः मंगत्रहाम ॥ ॐ ॥
हामकत्रैयाहामः नहिवउमालाः २ त्रागद्वेषमाहः वदि
त्रैकादिया ॥ ॐ ॥ वामदहिनकत्ररुत्रवैपात्राः २ क

त्रितवजानत्रः आरुणिकत्री ॥ ५ ॥ प्रहाद्युल्लुपः
 यित्रवर्जिरत्रविषाणिवापियात्रः आचार्यवेधत्रः ॥ ६ ॥
 कर्त्तिकोत्रकः अथनत्रहामरवायुसंरुदित्रः वीयास
 वात्रः ॥ ७ ॥ रागपञ्चजत्री ॥ नात्रमा ० ॥ मन्त्रसम
 यवक्रः मन्त्रलसंपूष २ द्वादशरुजवडवापियात्रः ॥ ८ ॥
 जानउकत्रुलः शुभसमत्रागिनी २ गायवक्रत्रादे
 वीश्वगात्रुनी २ अकिनित्रामाखन्त्राहात्रुपिनी २

मन्त्रसमयवक्र

५॥

१॥ शुद्धिदिगं व न ॥

वात्रिमात्रचउवापियात्रे॥ ॐ ॥ कायवाकचिह्निः प्रि
नीहवनेरदानपगियासूरश्रवणात्रनी॥ ॐ ॥
योगयागिनीमत्रिः समत्रसंलग्यरुषसम्भने
शाहेरुव॥ ॐ ॥ ॥ त्रागगन्धहेत्रवी॥ तात्रऊ
गि॥ पूर्वदिगभवन्चउगसम्भने॥ देवीयुक्तायनि
हंसाभेनीरहेलवमाहाकात॥ गनपगिकूमात्राः वी
लेऊगुयात्रऊऊयऊनी॥ ॐ ॥ पूजियात्रममश्रु

दिगदिगपूजा

दिगदिगपूजा

गीवलीतूधिताः बौउसगिजागिनीमागिकाः तूउरवनशु
अवसमनः रगपगपिअवगज्ज ॥ ५॥ उरुत्र
गमवनः कालाकूलसमनः देवीतूद्रायनीः वृववाह
नी ॥ ५॥ अलनकोलकित्रिंकी त्रिसमनः देवी
कामात्रीमयूतासुनी ॥ ५॥ नैजयकनेतजीव
रुसमनः देवीवैसुवीः गतूणसनी ॥ ५॥ दडि
मदिगमंवनः धात्राचकसमनः देवीवात्राहीमहि

वातूत्रहः। जिनपदयानीत्रं एहापूत्रकः। जिनजननीव
 ऊजागिनी २ जयंजयः। हाउआएत्रनसूखला। कत्रगि
 कपात्रध्वत्रनी २ जयंजयः। त्रुडसूखनलकः। गिति
 यत्रुडनत्रसीत्रमाला २ जयंजयः। तारखरुजगतसंभ
 तः। पुनमामिष्टदयवाकूत्री॥ ॐ ॥ **गागगध्वत्रहेतवी॥**
गात्रषठकंकाल॥ पूर्वदिगितिहितः। बुधायनीदवी। क
 नकवर्गगी। हंभसनी॥ ॐ ॥ **उदिचांदिगितिहितः**

+
 पूर्वदिगितिहितः॥

पूर्वदिगितिहितः॥

गतदिगितिहितः

१ राजायनीदेवीः चतुस्रसदहाः वृषवाहनी ॥ ३ ॥ अथ
सुष्मलः वीलं विप्रश्नः नां च यिसुहजा ज्ञानदुतः ॥ ३ ॥
२ या म्पादिगिहिनः वात्रादिदेवीः वन्धिसमदहाः महिषा
सनी ॥ ३ ॥ अथ यथाहिनः कामात्रिदेवीः अत्रुनसं
नितः मयूलासनी ॥ ३ ॥ अथ यथाहिनः वेष्टु
वीदेवीः हलिनवर्त्तगीः गत्रुजासनी ॥ ३ ॥ वायु
यथाहिनः कालिकादेवीः सूर्यसमदहाः पुतासनी ॥ ३ ॥

१ उ३ ग स म ष म न ।

ॐ नमः पृथ्वीहिता महा लक्ष्मी देवी ॥ ॐ सवर्णसिंहा
शनी ॥ ॐ ॥ गगनगुह्यवर्णः शिखरगणधतीया गम
वन्ति सिद्धि वज्र वज्राकार्यगीता ॥ ॐ ॥ **रागगन्ध**
तरेत्रवि ॥ तात्र षष्ठकं कात्र ॥ चतुर्गत्तमव्यमः सितसं
वीजा वायुकिना गमः गर्जितमेघा ॥ ॐ ॥ गं कत्र सम
व्यमः पृथ्वकवृजा चूनिगमेघा गतुकना गम ॥ ॐ ॥
ॐ उ३ उ३ मर्जा गे उ३ वद्विवायूना उ३ मः दिगं विदिगं

गण दिगं पूजा

वत्रिदवति॥ ३ ॥ अहहाससमठ्यनः कृत्तुसंवी
त्रुष्टत्रः नां वयि सरुजा आननुत्र॥ कंकत्रीघात्ताः व
लिगमघाः का लांकूलसमठ्यनः कर्कगकभगम॥ क
त्रकलेरुयाः वलिगमघाः सत्रसिजनागमः वूठकवीजा॥
अहहाससमठ्यनः अथपात्रनागमः पुवत्तुमघाः व
हमहिगृहा॥ तस्मीवक्तसमठ्यनः कत्रं ऊरवीजाः चूनी
गमघाः महापत्रनागम॥ धात्रीधकसमठ्यनः पकि

गविजाः ॐ न न नागमः पूत न ल म घा ॥ किलिकितिसुमम्भ
 नेः ॐ न न वीजाः कूलीक न म गमः व र्ध न म घा ॥ दाद ग र
 जाः दाद ग र व नाः व उ य न्न व द न्नः दाद ग न य ना ॥
 ए न यी क न्ति पा तः ग र व र्ध न म गमः काली ग पि त्री पू वा
 प यी व द ना ॥ ॐ ॥ ग ग म धू म ग ॥ ग ग र्ज म न ॥
 न मा मि र्ग ह त्र व वी गः व ड ण व त कू त्री ण उ ना ॥
 पं र्ध व क क पा ग त र्क नाः ॐ रि ग न त र्ध व नी त र

१ न मा मि र्ग ह त्र
 व ॥

नू॥ ॐ ॥ न नारं २ न नारं न नारं ॥ स यत्र स व्यापी न।
क नू नम स यः स त्व उ द्वा त गी स म्य त्रा ॥ ॐ ॥ न मा मि २
ग उ च म वि रू षि नाः व्या घृ य म ष ठ मू डा ग न म त्री ग
न। अ द य स मा धिः व उ य ष ठ आ लि ट प दं ॥ ॐ ॥ न
मा मि २ आ लिं का ली प चा पि न। द्वा द श र उ र व न ष
त्राः उ म नू क त मि प त स व्या ग ति गू त्राः स्व द्वा र्ग क पा त
ब्र ह्म गी त्रा ॥ ॐ ॥ न मा मि २ च उ विं षा मि पि थ ष त्रः

ॐ नमो भगवते

विष्णुव्यापितः। पुनीतावनिः। एतन्मि मूकिवत्र हाक वेः न
मा सु २ प स नी ल्य वत्रा ॥ ५ ॥ त्र ग ग न्ध त्र र वि ॥
गात्र उ प ॥ पुनीता य न व उ। वृ क्री वी हा ला। कत्र हं व कि
धनः। म र्ग त्र हा मे ॥ ५ ॥ हा म क त्रै या हा मे। न हि व उ।
माला २ त्र ग मू क व मा ह। व दि त्र का दि या ॥ ५ ॥ वा म द हि
न क त्र सु त्र वै पा ण २ क त्रि ग व ज्ञा न त्र। आ रु मि क त्री ग ॥ ५ ॥
प्र हा ण ६ उ पा यि त्र व डि २ त्र वि षा णि वा पि या त्रः। आ वा

५ रात्रमस्तु॥

य्यविधयः॥ ॐ ॥ कर्तुवात्रकः अरुत्रहामश्वायूसंरुदि
त्रोयीयासंयत्र॥ ॐ ॥ गगनागक॥ गात्रइकुमान॥
रात्रमस्तु तमाजः मासकिदवीश्चालिकातीद्रयवा
यपिहृत्तुव॥ ॐ ॥ नमामिश्च मासकिदवीः अरु
वननाथ॥ संपूर्णमृगकृत्तुः अगगवखान॥ ॐ ॥
त्रकवर्त्तवउमृषः अिनित्रावनाश्चिविष्वकुलिसः अ
र्चवर्त्तनश्च॥ ॐ ॥ अकिनीत्रामाः खउत्राहात्र

॥ वरुणा गी ॥

विनीरुचउत्रदवीकिदकिवीत्रासा॥ ॐ ॥ एषिगरव
गमूडाः कुंतीसंवित्रश्वर२ एनयिज्जुनूपमः वज्रमा
मकिदाता॥ ॐ ॥ **त्रागवप्रंजति॥** **गात्रमा०॥** वरुणा
गिनीदवीः प्रिहवन्नयापिनी२ विष्णुमात्रइकदप्य
विनाशनी॥ ॐ ॥ नमामि२ श्रीवज्रवात्राही२ अदि
सिद्धिदायनीः जगत्तननी॥ पूर्वदुलगत्तक
गी२ ऐं नमामिनिदवीः नीलवर्णीगी॥ वायुवाम

१५२ म हा पाठ।

समयाऽननु ए न कि हा यि ॥ ६ ॥ वित्रं वीत्रं वत्र वयि
धने । ममुल माह नि विष्वरुतिया २ ७ हुं कात्रा वतिदा
दवी । दान पणिया विष्णु निवालय ॥ मय श्री सम्वत्र माउ
कात्रवकुः हवज काय विष्वरुतिया २ या गया गिनी म
त्रिया विष्वज ननी ॥ समया ननु ए न कि हा यि २ हिं ह
नाद वाजिया त्र ७ मत्रु प्र सा दे । जृष्ठ या गिनी दान पूष २
जालंधत्र वृते जृवधूवत्र यिया १ कर्ण पावत्र न ए न कि

१ पंचम अंग ॥

हायि॥ ॐ ॥ नागहेयि न वि॥ नात्र उ प॥ पंचम अंग
मंत्रियात्रेः समयाः वा य्यविष्वखात्रुत्रहे २ दठादिगद
वतश्चात्रुत्रु एवकेः दानपतिया विघ्ननित्रवात्रुत्रहे॥ ॐ ॥
हं हं वीत्रवीत्रे वत्रवलिदानदेहाः दानपतियासूत्रे
वगात्रुत्रहे॥ ॐ हं कालवलिअपियात्रेः मनुलमात्रुवि
ष्वखात्रुत्रया २॥ पूर्ववेत्राचनः दजिनत्रलसम्वः प-
किमअमगाएः जिनव्यापियात्रे॥ उलत्रजुमाद्यसि

धि माउ अऊा एः वातिमालवउवापियात्र २ समाधि आस
 मत्र माउः कात्रवऊ ५ ह वऊ विष्णु रात्रुत्र हे २ ना ना वा
 धि सत्य आ सिवाद नः म नु ल मात्रु विष्णु कात्रुत्र हे ॥ सिंह
 नाद वाडियात्र उ मत्रु वाजं तः अ कऊा गि नी मत्रि षु धि
 यात्र २ जालं धति पूगा क र्त्त पा ग म वयियाः वातिमालव
 उवऊ अ पियात्र ॥ ५ ॥ **नाग मधू म न ॥ नात्र उा गि ॥** क
 रिग वऊा नत्रणी वऊ सम्वत्रः ह कात्रार वडिकायवप्रमानंः

✕
 १ क रिग वजा
 नत्र ॥

मां साहृति मयमासंशगाः पंच सात्रिमयमासहकुंडा ॥ ५ ॥
स्वस्वस्वायि २ गे लम कुदहनः पंचामि यात्र स अत्रि ना २
शिवज यागिनी दार्कि भीत्रा मास्य सुत्रा हात्रूपिनी पंचया
गिनी २ कृति संवित्रवीत्र ष्वत्रः मगुत्र कल ठा कित्रिकित्रा
यमाना ॥ ७ ॥ मत्रुघ्न धनिपुमादि तवाजि यात्रः दानप
तिविद्युवि नासिगा २ यागिनी पंचदेवीः पंचमयगस्यना
एवकुशु एवमनि यष्टियात्र २ मात्रयिना सनः त्रकु २ स
यत्राः अत्रिम पस्वस्व हल माकु एवकु २ सर्वसिद्धि वाक्

॥ ३२ ॥

उरुजागताः कत्राहति आचार्यसाकविर्हसाश्च थमा
हृगिक्रयानि सयत्राः ॥ अत्र नृत्तज्ञानसत्त्वभाउप्रदागा ॥ ३२ ॥
नागजत्रवडना ॥ नात्र अकमा ० ॥ द्विष्टुअद्वि मृत्युनि
नयनाः सकृत्केशादिगम्यत्रा ॥ ३३ ॥ गेनाका ३ ॥ वास
क्रीठकदहिनकत्राणिः हादआएत्र नरुविगा ॥ सूर्यम
उलमाउः गाठवमूत्राणिः नलसित्रमाला सुखमहिगा
सगुत्रयत्रने सित्यंगगधत्रीयाः वडवात्राहि आलि

पुस्तक
॥

गीता ॥ ॐ ॥ **॥ प्रागमात्रव ॥ प्रागमा ० ॥** पूर्वदिगल्लिगहं
सासनीदवीश्चठवदनिदवीश्चत्रितगिष्त्र ॥ ॐ ॥
नमामिष्ठातेत्रवमातृकागनयतिकुमात्रा ॥ ॐ ॥
त्रयश्चयागिति जालिङ्गम् ॥ त्राङ्कावदनिष्ठरितम् ॥ स
युतासनीदवीः विन्नुपात्रश्चत्रीवेषूवीदवीः वदनध्यात्र
त्रुपिनीवात्राहीदवी ॥ कुंकुमवदनी ॥ उायनीदवी ॥ क
त्ररवश्चश्चत्रिकंकात्रमूत्राणीः पुनमामिदवीष्ठासहालः

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

श्रीसुत्रम् ॥ ॐ ॥ त्रगमात्रव ॥ त्रमा ० ॥ निउशुव ॐ
वधूवहत्रुवल यिया २ सित्रीहगगमनेयागि नीपुवी ॥ ॐ ॥
शानकादिउयवाकत्रीः शानलुलीयाः नावयिहत्रुवम
नसासंपूत्र २ ७ कसिगयिवात्रुनीउकूलहत्रुवः ॐ वलि ॐ
नखनेकवउकया ॥ ॐ ॥ ॐ उदयानिलकूलयिचडा
त्रीः गीत ॐ नहा नेकनेनका ॥ ॐ ॥ पयिसयिइवी ॐ
पंसंराः किउनि क मल कू लि नर्ण एदवन्का ॥ ॐ ॥ ॐ

ति कालि इयिगात्र या ऊ कः ७ का ने क या गि नी म भु ल त्रा
या ॥ ५ ॥

१ॐ नमोऽष्टागुण्युवजसत्त्वाय ॥

॥ जाड्यं ॥

१ॐ नमोऽष्टागुण्युवजसत्त्वाय ॥

॥ कला ॥

१ॐ नमोऽष्टागुण्युवजसत्त्वाय ॥

॥ जाड्यं ॥

अथ यत् ॥ अथ यत् ॥ १ ॥

॥ १ ॥ कला ॥

कमलवत् ॥ समुद्रिन् ॥ २ ॥

॥ गज ॥ २ ॥ जाड्यं ॥

सहस्रवत् ॥ समलसं ॥ ३ ॥

॥ राव ॥ ३ ॥ कला ॥

समाधिगुण ॥ अथ यत् ॥ ४ ॥

॥ हान ॥ ४ ॥ जाड्यं ॥

सुसजिनमय ॥ किनवत् ॥ ५ ॥

॥ रविर्ग ॥ ५ ॥ कला ॥

दह चय ॥ गथगा ॥ ॥ ६ ॥ ॥ संङ्गं ॥ ॥ जाङी ॥

कञ्जल जस ॥ मृदि न ॥ ॥ ७ ॥ ॥ विलासिन ॥ ॥ कला ॥

चर्मनन् ॥ गिजुवन ॥ ॥ ८ ॥ ॥ जयं जयं ॥ ॥ जाङी ॥

कलिसकय ॥ सून्य ॥ ॥ ९ ॥ ॥ त्रिभुक्ति ॥ ॥ कला ॥

शिवउ सत्य ॥ पञ्चभाणु ॥ ॥ १० ॥ ॥ जाङी ॥

चंभां चं यो सं रं गं गं मं जूं यो रं सं जां गं पुं न्यं चूं कुं जां पिं सिं रं किं
नं लूं मां जां रं किं नं लूं चं यो गं रं नं मां मिं तां जूं कुं लिं स्यं : रं पिं तां रं
गीग ई ई ई ई २



